वर्ष 16 अंक 74 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, बुधवार 16 मार्च 2022

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com पेज -8

मथुरा की पृष्ठभूमि पर आधारित है शो 'मि

कॉलेज के छात्र-छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए किया जागरूक

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आज बुद्ध लाल वर्मा इंटर कॉलेज भेवान के छात्र छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए जागरूक किया। इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अशोक कुमार ने छात्र छात्राओं को बताया कि स्ट्रॉ चॉपर कृषि यंत्र से फसल अवशेषों को बारीक टुकड़ों में काटकर भूमि में मिला दिया जाता है। तत्पश्चात हैप्पी सीडर द्वारा सीधे गेहूं की बुवाई कर देते हैं। उन्होंने छात्र-छात्राओं को जागरूक करते हुए बताया कि फसल अवशेषों का मल्च के रूप में प्रयोग करके खरपतवारों को भी कम किया जा सकता है। साथ ही साथ मृदा की सेहत में भी सुधार होता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष गर्मी के तापमान को भी कम करता है।फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान ने छात्र छात्राओं को बताया कि मृदा में कार्बनिक पदार्थ ही एकमात्र स्रोत है। जिसके द्वारा मृदा से पौधों को विभिन्न पोषक तत्वों को उपलब्ध हो जाते हैं। तथा कंबाइन द्वारा फसल कटाई करने पर अनाज की तुलना में 1.29 गुना अन्य फसल अवशेष होता है। यह मृदा में सड़कर कार्बनिक पदार्थ की वृद्धि करते हैं।

Sign in to edit and save changes to this file.

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

...राग ठाकुर ने आजादी के अमृत महोत्सव... 12 | भाजपा तथा बसपा के मेल से हो गया खेलः राजभर 05

जन एक्सप्रेस

लखनऊ
वर्षः 13 | अंकः 153
मूल्यः ₹3.00/-
पेज : 12

@janexpressnews | janexpresslive | janexpresslive | www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ | बुधवार | 16 मार्च, 2022

मृदा में कार्बनिक पदार्थ ही एकमात्र स्रोत का साधनः डॉ. खलील खान

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा मंगलवार को बुद्ध लाल वर्मा इंटर कॉलेज भेवान के छात्र छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए जागरूक किया।

इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.अशोक कुमार ने छात्र छात्राओं को बताया कि स्ट्रॉ चॉपर कृषि यंत्र से फसल अवशेषों को बारीक टुकड़ों में काटकर भूमि में मिला दिया जाता है। तत्पश्चात हैप्पी सीडर द्वारा सीधे गेहूं की बुवाई कर देते है। उन्होंने छात्र-छात्राओं को जागरूक करते हुए बताया कि फसल अवशेषों का मल्च के रूप में प्रयोग करके खरपतवारों को भी कम किया जा सकता है। साथ ही साथ मृदा की सेहत में भी सुधार होता है।

उन्होंने कहा कि फसल अवशेष गर्मी के तापमान को भी कम करता है। फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ. खलील खान ने छात्र छात्राओं को बताया कि मृदा में कार्बनिक पदार्थ ही एकमात्र स्रोत है। जिसके द्वारा मृदा से पौधों को विभिन्न पोषक तत्वों को उपलब्ध हो जाते हैं। तथा कंबाइन द्वारा फसल कटाई करने पर अनाज की तुलना में 1.29 गुना अन्य फसल अवशेष होता है। यह मृदा में सड़कर कार्बनिक पदार्थ की वृद्धि करते है।

डॉक्टर खान ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया कि फसल अवशेषों में लगभग सभी पोषक तत्व होते है। लेकिन नाइट्रोजन 0.45 प्रतिशत होता है। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. शशिकांत ने छात्र छात्राओं को बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव, मृदा के भौतिक गुणों पर प्रभाव एवं पशुओं के लिए हरे चारे की कमी हो जाती है। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन पर स्लोगन, निबंध लेखन, चित्रकला एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य सुभाष चंद्र, अध्यापक जगदीश चंद्र, उमेश सिंह सहित लगभग 200 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

हिंदुस्तान 16/03/2022

छात्रों ने सीखा फसल अवशेष प्रबंधन का तरीका

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के केवीके की ओर से बुद्ध लाल वर्मा इंटर कॉलेज के छात्र-छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन की जानकारी दी गई। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि स्ट्रॉ चॉपर कृषि यंत्र से फसल अवशेषों को बारीक टुकड़ों में काटकर भूमि में मिला दिया जाता है। फिर हैप्पी सीडर से सीधे गेहूं की बुवाई कर देते हैं। फसल अवशेषों का मल्च के रूप में प्रयोग करके खरपतवारों को भी कम किया जा सकता है।

राष्ट्रीय सहारा
16/03/2022

फसल अवशेषों से किया जा सकता है मृदा की सेहत में सुधार

कृषि विश्वविद्यालय ने छात्र-छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन की दी जानकारी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र में छात्रछात्राओं को फसल अवशेष प्रवंधन के लिये जागरूक करते हुए वताया गया कि इनके जरिये मृदा की सेहत में सुधार किया जा सकता है। इस दौरान फसल अवशेष के उपयोग के बारे में भी वताया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र में वुद्धलाल वर्मा इंटर कॉलेज, भेवान के छात्रछात्राओं को केन्द्र के अध्यक्ष व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.अशोक कुमार ने वताया कि स्ट्रॉ चॉपर कृषि यंत्र से फसल अवशेषों को वारीक टुकड़ों में काट कर भूमि में मिला दिया जाता है। इसके वाद हैप्पी सीडर द्वारा सीधे गेहूं की वुवाई कर दी जाती है। उन्होंने वताया कि फसल अवशेषों को मल्च के रूप में भी प्रयोग कर खरपतवारों को भी कम किया जा सकता है। इसके साथ ही इससे मृदा की सेहत में भी सुधार होता है। फसल अवशेष गर्मी के तापमान को भी कम करता है। फसल अवशेष प्रवंधन के नोडल अधिकारी डॉ.खलील खान ने वताया कि मृदा में कार्वनिक पदार्थ ही एकमात्र स्त्रोत है, जिसके द्वारा मृदा से पौधों को विभिन्न पोपकतत्व प्राप्त हो जाते हैं। कंवाइन द्वारा फसल की कटाई करने पर अनाज की तुलना में 1.29 गुना अन्य फसल अवशेष होता है। यह मृदा में सड़कर कार्वनिक पदार्थ की वृद्धि करते हैं। उन्होंने छात्रछात्राओं को वताया कि फसल अवशेषों में लगभग सभी पोपकतत्व होते हैं, जवकि इसमें .45 प्रतिशत नाइट्रोजन होता है। केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ.शशिकांत ने फसल अवशेष में आग लगाने से पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव, मृदा के भौतिक गुणों पर पड़ने वाले प्रभाव और पशुओं के लिये हरे चारे की होने वाली कमी के वारे में वताया। इस मौके पर फसल अवशेष प्रवंधन पर स्लोगन, निवंध लेखन, चित्रकला और वादविवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन भी किया गया। इस मौके पर प्रधानाचार्य सुभाष चंद्र, जगदीश चंद्र, उमेश सिंह व वड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद थे।

Sign in to edit and save changes to this file.

विद्यार्थियों को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए किया जागरूक

निबंध लेखन, चित्रकला एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

फसलों के बारे में जानकारी लेते छात्र-छात्राएं।

कानपुर, 15 मार्च। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आज बुद्ध लाल वर्मा इंटर कॉलेज भेवान के छात्र-छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए जागरूक किया। केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अशोक कुमार ने छात्र-छात्राओं को बताया कि स्ट्रॉ चॉपर कृषि यंत्र से फसल अवशेषों को बारीक टुकड़ों में काटकर भूमि में मिला दिया जाता है। तत्पश्चात हैप्पी सीडर द्वारा सीधे गेहूं की बुवाई कर देते हैं। उन्होंने फसल अवशेषों का मल्च के रूप में प्रयोग करके खरपतवारों को भी कम किया जा सकता है और मृदा की सेहत में भी सुधार होता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष गर्मी के तापमान को भी कम करता है।फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान ने बताया कि मृदा में कार्बनिक पदार्थ ही एकमात्र स्रोत है। जिसके द्वारा मृदा से पौधों को विभिन्न पोषक तत्वों को उपलब्ध हो जाते हैं। तथा कंबाइन द्वारा फसल कटाई करने पर अनाज की तुलना में

● स्ट्रा चापर कृषि यंत्र से फसल के बारिक टुकड़े

1.29 गुना अन्य फसल अवशेष होता है। डॉ. खान ने बताया कि फसल अवशेषों में लगभग सभी पोषक तत्व होते हैं लेकिन नाइट्रोजन 0.45 प्रतिशत होता है। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने छात्र छात्राओं को बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव, मृदा के भौतिक गुणों पर प्रभाव एवं पशुओं के लिए हरे चारे की कमी हो जाती है।इस अवसर पर छात्र-छात्राओं द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन पर स्लोगन, निबंध लेखन, चित्रकला एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य सुभाष चंद्र, अध्यापक जगदीश चंद्र,उमेश सिंह सहित लगभग 200 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

छात्र-छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए किया जागरूक

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आज बुद्ध लाल वर्मा इंटर कॉलेज भेवान के छात्र छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए जागरूक किया। इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अशोक कुमार ने छात्र छात्राओं को बताया कि स्ट्रॉ चॉपर कृषि यंत्र से फसल अवशेषों को बारीक टुकड़ों में काटकर भूमि में मिला दिया जाता है। तत्पश्चात हैप्पी सीडर द्वारा सीधे गेहूं की बुवाई कर देते हैं। उन्होंने छात्र-छात्राओं को जागरूक करते हुए बताया कि फसल अवशेषों का मल्च के रूप में प्रयोग करके खरपतवारों को भी कम किया जा सकता है। साथ ही साथ मृदा की सेहत में भी सुधार होता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष गर्मी के तापमान को भी कम करता है।फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान ने छात्र छात्राओं को बताया कि मृदा में कार्बनिक पदार्थ ही एकमात्र स्रोत है। जिसके द्वारा मृदा से पौधों को विभिन्न पोषक तत्वों को उपलब्ध हो जाते हैं। तथा कंबाइन द्वारा फसल कटाई करने पर अनाज की तुलना में 1.29 गुना अन्य फसल अवशेष होता है। यह मृदा में सड़कर कार्बनिक पदार्थ की वृद्धि करते हैं। डॉक्टर खान ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया कि फसल अवशेषों में लगभग सभी पोषक तत्व होते हैं लेकिन नाइट्रोजन 0.45 प्रतिशत होता है। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने छात्र छात्राओं को बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव, मृदा के भौतिक गुणों पर प्रभाव एवं पशुओं के लिए हरे चारे की कमी हो जाती है इस अवसर पर छात्र-छात्राओं द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन पर स्लोगन, निबंध लेखन, चित्रकला एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य सुभाष चंद्र, अध्यापक जगदीश चंद्र,उमेश सिंह सहित लगभग 200 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

छात्र छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए किया जागरूक

केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अशोक कुमार ने बच्चों को दी जानकारी

लोक भारती न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आज बुद्ध लाल वर्मा इंटर कॉलेज भेवान के छात्र छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए जागरूक किया।

इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अशोक कुमार ने छात्र छात्राओं को बताया कि स्ट्रॉ चॉपर कृषि यंत्र से फसल अवशेषों को बारीक टुकड़ों में काटकर भूमि में मिला दिया जाता है। तत्पश्चात हैप्पी सीडर द्वारा सीधे गेहूं की बुवाई कर देते हैं। उन्होंने छात्र-छात्राओं को जागरूक करते हुए बताया कि फसल अवशेषों का मल्च के रूप में प्रयोग करके खरपतवारों को भी कम किया जा सकता है। साथ ही साथ मृदा की सेहत में भी सुधार होता है। उन्होंने

छात्र-छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन के प्रति जागरुकरते विशेषज्ञ

कहा कि फसल अवशेष गर्मी के तापमान को भी कम करता है। फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान ने छात्र छात्राओं को बताया कि मृदा में कार्बनिक पदार्थ ही एकमात्र स्रोत है। जिसके द्वारा मृदा से पौधों को विभिन्न पोषक तत्वों को उपलब्ध हो जाते हैं। तथा कंबाइन द्वारा फसल कटाई करने पर अनाज की तुलना में 1.29 गुना अन्य फसल अवशेष होता है। यह मृदा में सड़कर कार्बनिक पदार्थ की वृद्धि करते हैं। डॉक्टर खान ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया कि फसल अवशेषों में लगभग सभी पोषक तत्व होते हैं लेकिन नाइट्रोजन 0.45 प्रतिशत होता है। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने छात्र छात्राओं को बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव, मृदा के भौतिक गुणों पर प्रभाव एवं पशुओं के लिए हरे चारे की कमी हो जाती है।इस अवसर पर छात्र-छात्राओं द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन पर स्लोगन, निबंध लेखन, चित्रकला एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य सुभाष चंद्र, अध्यापक जगदीश चंद्र,उमेश सिंह सहित लगभग 200 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया।